

लौट चलो SSSSS लौट चलो S
 अवध में SSS लौट चलो SSSSSSS
 विनय करूँ, विनय करूँ, विनय करूँ
 मेरे राम SSSSSSS लौट चलो -----

राज तिलक की सुन्दर बेला SSSS
 मैया ने वर माँगे SSSS
 राम को वन और भरत सिंगासन
 कैसे वचन उचारे

लौट चलो SSSSS -----

विनय करूँ -----

सूनी हो गई अवधपुरी ये SSS
 रो-रो सब नर हारे SSS
 व्याकुल होकर राऊभी मैया SSS
 देखो स्वर्ग सिधारे

लौट चलो SSSS -----

विनय करूँ -----

तुमने मेरी सुध बिसराई ॥३३३॥

कहें भरत मेरे भैया ॥३३३॥

हमको अकेला दौड़ के आये ॥३३॥

कैसी बोलीं भैया

लौट चलो ॥३३॥

विनय करूँ ॥३३॥

तुम बिन जीवन सूना लागे ॥३३३३॥

रो-रो भरत निहारे ॥३३३३॥

कहें "श्री बाबा श्री" यशु, तुम हो मेरे ॥३३॥

आयो शरण तुम्हारे ॥३३॥

लौट चलो ॥३३३३॥

विनय करूँ ॥३३॥